दिनांक :- 04-04-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

वर्ग :- 12वीं इतिहास (History)

सिंधु सभ्यता का पतन —

इस सभ्यता के पतन के लिए कोई एक कारक उत्तरदायी नहीं था, वरन् अलग-अलग स्थलों के लिए अलग-अलग कारक उत्तरदायी थे। सिंधु सभ्यता आंतरिक एवं एवं बाह्य व्यापार के सन्तुलन पर आधारित थी। विभिन्न कारणों से यह संतुलन टूट गया। एवं सभ्यता का पतन हो गया। पतन के संदर्भ में विद्वानों के अलग-अलग मत है। सिंधु सभ्यता के पतन का अर्थ सभ्यता की समाप्ति न होकर सभ्यता का रूप परिवर्तन है। बाद के काल में यह सभ्यता एक बार नगरीय चरण से ग्रामीण चरण में पहुँच गई। सिंधु घाटी के सभ्यता के पतन के संदर्भ में विभिन्न विद्वानों ने अलग-अलग मत प्रकट किए हैं जो निम्न है।

Scanned with CamScanner

विद्वान	मत
गार्डन चाइल्ड एवं व्हीलर	बाह्य एवं आर्यों के आक्रमण
जॉन मार्शल, मैके एवं एस आर राव	बाढ़
ओरल स्टाइन, ए एन घोष	जलवायु परिवर्तन
एम आर साहनी	भूगर्भिक परिवर्तन
जॉन मार्शल	प्रशासनिक शिथिलता
के यू आर कनेडी	प्राकृतिक आपदा

सिंधु घाटी (हड़प्पा) सभ्यता

कांस्ययुगीन, आद्य ऐतिहासिक कालीन हड़प्पा अथवा सिंधु घाटी सभ्यता विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं (दिगरिस और यूफ्रेट्स के तट पर मेसोपोटामिया, नील नदी के तट पर मिस्र तथा ह्वांगहो के तट पर चीन की सभ्यता) में से एक है। रेडियो कार्बन (C14) पद्धति के आधार पर इसका काल 2600 ई० पूर्व, से 1900 ई० पूर्व के बीच निर्धारित किया गया।

उद्भव एवं विस्तार

सिंधु घाटी सभ्यता भारतीय उप-महाद्वीप में प्रथम नगरीय क्रांती की अवस्था को दर्शाती है।